S-110 Roll No. ……..

PJ–102

फलित ज्योतिष के आधारभूत सिद्धान्त

फलित ज्योतिष में डिप्लोमा/प्रमाणपत्र

(डी. पी. जे./सी. पी.जे.-12/16/17)

प्रथम सेमेस्टर, सत्र, 2018

समय 3 घण्टे पूर्णांक : 80

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है जो तीन (03) खण्डों 'क', 'ख' तथा 'ग' में विभाजित है। शिक्षार्थियों को इन खण्डों में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. ज्योतिषशास्त्र की व्युत्पत्ति एवं परिभाषाओं का विस्तृत विवेचन कीजिए।
2. ग्रहों की बालादि अवस्थाओं का विवेचन कीजिए।
3. द्वादश राशियों में सूर्य एवं मंगल के शुभाशुभ फलों का वर्णन कीजिए।
4. अरिष्ट भङ्ग योगों का विस्तृत विवेचन कीजिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. ज्योतिषशास्त्र के प्रवर्त्तकों का नामोल्लेख कीजिए।
2. मेष एवं कर्क राशियों के गुणधर्म का वर्णन कीजिए।
3. मंगल एवं बुध ग्रह के गुणधर्म को लिखिए।
4. बृहस्पति एवं शुक्र ग्रह का परिचय दीजिए।
5. मंगल, गुरु एवं शनि की विशेष दृष्टियों को लिखिए।
6. तन्वादि द्वादश भाव से विचारणीय विषयों का वर्णन कीजिए।
7. द्वादश राशियों में बुध के फलों का वर्णन कीजिए।
8. चन्द्र से बनने वाले अरिष्ट योगों का वर्णन कीजिए।

खण्ड–ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. मेष एवं वृश्चिक के स्वामी ग्रह हैं :
   (अ) बुध
   (ब) गुरु
   (स) मंगल
   (द) सूर्य

2. सूर्य की उच्च राशि है :
   (अ) वृष
   (ब) कर्क
   (स) मीन
   (द) मेष

3. किस ग्रह के कोई शत्रु नहीं हैं ?
   (अ) चन्द्रमा
   (ब) सूर्य
   (स) शुक्र
   (द) शनि

4. गुरु की विशेष दृष्टियाँ हैं :
   (अ) 5, 9
   (ब) 4, 8
   (स) 3, 10
   (द) 8

5. प्रथम भाव के कारक ग्रह हैं :
   (अ) चंद्र
   (ब) मंगल
   (स) गुरु
   (द) शनि

6. उभयचरी योग बनता है :
   (अ) गुरु से

(ब) मंगल से

(स) सूर्य से

(द) चन्द्र से

7. गुरु का मूलत्रिकोण राशि है :

(अ) धनु

(ब) मीन

(स) कर्क

(द) तुला

8. चन्द्रमा से योग बनता है :

(अ) वेशी

(ब) रूचक

(स) सुनफा

(द) शश

9. चल करणों की संख्या है :

(अ) 11

(ब) 7

(स) 4

(द) 9

10. विंशोत्तरी महादशा के अनुसार गुरु की दशा वर्ष है :

(अ) 10 वर्ष

(ब) 7 वर्ष

(स) 16 वर्ष

(द) 18 वर्ष